SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शैक्षिक विकास में मानसिक एवं ग्रहण क्षमता की भूमिका: एक अध्ययन

तृप्ता कश्यप, Ph.D.
स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, रिसाली भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
तृप्ता कश्यप, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/06/2023
Revised on : -----
Accepted on : 24/06/2023
Plagiarism : 00% on 17/06/2023

शोध सार

व्यक्ति के समग्र विकास हेतु शारीरिक, मानसिक एवं ग्रहण क्षमता और संवेदनशीलता का विकास जरूरी है। इस हेतु पढ़ाई करना या पढ़ना अति आवश्यक है। 'पढ़ना क्या है' यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से मस्तिष्क में कौंधता है।

मुख्य शब्द

पढ़ना, लिपि, वर्ण, शैक्षिक विकास, मानसिक ग्रहण क्षमता.

पढ़ने की परिभाषा

श्री रमाकांत अग्निहोत्री जी 'पढ़ना किसे कहते हैं' अंग्रेजी लेख के अनुवाद में लिखते हैं– ''पढ़ना लिखित सामग्री से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है यह एक अत्यंत जटिल कौशल है जिसमें अनेक प्रकार की क्षमताओं का निरंतर संवाद होता रहता है।''[1]

बी एम सक्सेना के अनुसार 'शिक्षा के क्षेत्र में वाचन से तात्पर्य सार्थक प्रतीक, लिपि चिन्हों को पहचानना मात्र ना होकर उनके अर्थ ग्रहण करने से है।[2]

डॉ. राम शुक्ल पांडेय के अनुसार 'वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ साथ चलते हैं।'[3]

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि 'पढ़ना' संक्रिया में वर्ण चित्र का ध्वनि से संबंध बनाने की क्षमता का विकास होता है। बोले गए या पढ़े गए शब्दों के सार्थक अर्थ समझना भी समझने की प्रक्रिया भी अंतर्निहित है। अतः हम कर सकते हैं पढ़ना सही उच्चारण सही अर्थ ग्रहण सही विराम चिन्ह अभाव तथा उतार–चढ़ाव के साथ किया जाता है।

वाचन का महत्व

आज मानव ज्ञान के विस्फोट के दौर से गुजर रहा है। उसका ज्ञान समुद्र की छोटी बूंद की तरह है। आज

वह स्वयं को ढूंढ रहा है, मानसिक व बौद्धिक विकास को वह पाना चाहता है किंतु आध्यात्मिक और शांतिपूर्ण जीवन जीने की चाह भी रखता है। समय व समाज के साथ चलने के लिए पढ़ना बहुत ही जरूरी हो गया है।

वाचन या पठन के महत्व के लिए डॉक्टर श्रीधर नाथ मुखर्जी लिखते हैं कि 'वाचन एक कला है और यही ज्ञानार्जन की कुंजी है। वाचन शक्ति ठीक रहने पर ही मनुष्य जटिल विषय को पढ़कर समझ सकता है तथा पढ़े हुए अंश का सार बोल सकता है, लिख सकता है। वाचन कर अच्छा वक्ता बन सकता है और अच्छा लेखक भी अर्थात् स्पष्ट है कि वाचन क्रिया मृत्यु पर्यंत मानव की साथी है।'[4]

इस तरह वाचन का बहुत ही अधिक महत्व प्रतिपादित होता है। व्यक्तित्व विकास के लिए यह एक महत्वपूर्ण आयाम है।

कक्षा शिक्षण में वाचन के स्तर को जांचने पर निम्नांकित परिणाम आयाः

कक्षा में दर्ज कुल बच्चों की संख्या–50

स्तर 1: स्वयं पढ़कर समझने वाले बच्चों की संख्या 12 अर्थात् 24 प्रतिशत।

स्तर 2: अपने साथी से चर्चा करके समझने वाले बच्चों की संख्या 15 अर्थात् 30 प्रतिशत।

स्तर 3: बिना समझे केवल पढ़ लेने वाले बच्चों की संख्या 16 अर्थात् 32 प्रतिशत।

स्तर 4: पढ़ नहीं पाने वाले बच्चों की संख्या 7 अर्थात् 14 प्रतिशत।

मेरे अध्यापन का यह निष्कर्ष है। इसका यह तात्पर्य है कि जो बच्चे पढ़ने की संक्रिया को समझ गए हैं वह निर्देशों को पढ़कर स्वयं समझ जाते हैं। साथी के साथ चर्चा करके समझने वाले बच्चे अपनी समझ को सुनिश्चित करते हैं। स्तर 3 के बिना समझे पढ़ लेने वाले बच्चों की संख्या 32 प्रतिशत है। क्या पढ़ा इन्हें नहीं पता जिस पर विचार करना जरूरी है। पढ़ नहीं पाने वाले बच्चों का प्रतिशत 14 है, यह बच्चे प्राथमिक कक्षा में ध्यान से वर्णमाला पढ़ने का अभ्यास नहीं किए हैं। यह बच्चे शारीरिक रूप से कक्षा में थे मानसिक रूप से नहीं।

पठन कार्य न कर पाने का दुष्परिणाम क्या हैः

1. बच्चा हीन भावना से भर जाता है, उसमें आत्मविश्वास की कमी होती है।
2. बच्चा शिक्षक से, होशियार साथियों से बात करने से डरता है।
3. बच्चा पढ़ाई में पिछड़ता जाता है।
4. बच्चा चाहते हुए भी मदद नहीं मांग पाता ।
5. मनोरंजन से वंचित हो जाता है।
6. बच्चा संकोची स्वभाव का अंतर्मुखी बन जाता है।
7. अन्य कार्यों में अच्छा होने के बावजूद भी कभी प्रशंसा नहीं पा पाता।

बच्चों का बहुत ही सूक्ष्म अवलोकन किया जाना चाहिए। बच्चों की प्रवृत्ति क्रियाकलापों को ध्यान से देखने पर हम कक्षा के कमजोर बच्चों का चिन्हांकन आसानी से कर लेते हैं। इन बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए पुनः शब्द, वर्ण, मात्रा का खेल कक्षा में कराने की जरूरत पड़ती है, जिससे उन्हें यह लगे 'अरे यह तो मैं जानता था।' 'यह तो मुझे आता है।' 'अच्छा तो इसका अर्थ यह था।' बच्चे के स्वभाव में धीरे–धीरे परिवर्तन आता जाता है और वह पढ़ना शुरू कर देता है।

पढ़ने की रुचि में कमी आना एक ज्वलंत समस्या है। समय के साथ हमारे भाव प्रकट करने के माध्यम बदल गए हैं। हमारा अधिकतर काम हमारा मोबाइल करता है। बच्चों पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा है। बच्चों का बहुत बड़ा वर्ग यह नहीं जानता कि पुस्तक पढ़कर भी मनोरंजन किया जा सकता है। पुस्तक आज के समय में अनुपयोगी हो गए हैं बच्चे अपने आसपास किसी को पढ़ते हुए नहीं देखते हैं। पढ़ने को मनोरंजक कैसे बनाया जाएः

1. मोबाइल द्वारा पढ़ने को मनोरंजक बनाया जा सकता है। आज के सर्व उपलब्ध मोबाइल को ही साधन बनाया जाए। बच्चे एक कहानी ढूंढ कर और पढ़कर सुनाएं। आज उनके पास कहानी की पुस्तक नहीं है। मोबाइल में ही कई जातक कथाएं तथा पंचतंत्र की कहानियां तथा अनूदित साहित्य हैं, इनका वाचन किया जा सकता है।
2. **पत्र पत्रिकाओं द्वाराः** अखबार में भी रविवारीय या अन्य अंक आते हैं, जिनमें कई लेख, कहानियां होती

हैं उनका भी उपयोग किया जा सकता है।

3. **पुस्तकालय का उपयोग करके:** पुस्तकालय में कई कहानी संग्रह आदि होते हैं। इनका वाचन कराया जा सकता है।
4. **प्रार्थना सभा में अखबार वाचन:** अखबार वाचन एक आसान व सुलभ संसाधन है। प्रतिदिन वाचन से मुख्य घटनाओं के बारे में जानकारी मिलती है। सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है।
5. **नीति वाक्य व श्लोक का वाचन:** प्रार्थना सभा में या कक्षा में प्रथम कालखंड में प्रतिदिन एक श्लोक, नीति वाक्य, सुविचार पढ़कर सुनाएं और याद करके बोले, यह भी कराया जा सकता है।
6. अपनी गली में पड़ने वाले दुकानों के नाम को पढ़ना।
7. ट्रक, टेंपो आदि वाहनों के पीछे लिखे वाक्यों को पढ़ना।
8. चुटकुले पढ़ना और कक्षा में बताना।
9. कविताओं का वाचन करना, कई महान कवियों की कविताएं हमें मोबाइल में उपलब्ध है इनका वाचन भी कराया जा सकता है।
10. जीवनी को पढ़ना कई वैज्ञानिकों, कवियों की जीवनी तथा नई खोजों के बारे में भी पढ़ा जा सकता है ।
11. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ बच्चों को पढ़ाया जा सकता है। चोट जीपीटी के द्वारा भी शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

पढ़ने की प्रक्रिया को बच्चों में विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। जिन बच्चों ने वर्ण– चित्र स्वर का मेल तथा वर्ण से शब्दों का निर्माण और पूरे वाक्य को बनाना सीख लिया, वह उत्तरोत्तर होशियार होता चला जाता है। उसके समझ में यह आता है कि शब्द के अर्थ और वाक्य के अर्थ अलग हो सकते हैं किंतु समेकित भी होते हैं और इन से परे भी एक अर्थ होता है। इस तरह बच्चा शब्द से वाक्य, वाक्य से अनुच्छेद और फिर पूरा लेख या कहानी को समझना सीखता है। पढ़ना सीखने से उसके व्यक्तित्व में बहुत बदलाव आता है जिन दुष्परिणामों को हमने चिन्हित किया है वह दूर हो जाते हैं। तीसरे व चौथे स्तर के बच्चों को आगे बढ़ते देखना बहुत ही सुखद होता है। एक मासूम वाक्य ''मैडम जी इसको पढ़ना मैंने सीख लिया, पढ़ कर सुनाऊं'' उसकी आंखों में प्रशंसा की चाहत होती है शिक्षक की स्वीकारोक्ति मिलते ही वह आत्मसम्मान से भर उठता है। कक्षा में प्रतिदिन चक्रण में बैठक व्यवस्था अर्थात रोज पीछे वाले बच्चे आगे बैठेंगे। यह व्यवस्था बच्चों में बैठने के स्थान के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन लाती है। आगे बैठकर पढ़ने का अवसर सभी बच्चों को मिलता है। आगे बैठकर ठीक से पढ़ना है यह उत्तरदायित्व भी अनजाने में मिलता है। कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं के मूल्यांकन का स्वरूप अलग है किंतु कक्षा 9 में आते ही बच्चों का लिखित मूल्यांकन आरंभ हो जाता है। लिखित कार्य करने के लिए पढ़ना, याद करना जरूरी है। पढ़ने के साथ ही विषय को आत्मसात करना भी जरूरी है, आत्मज्ञान का व्यवहार में प्रदर्शन भी दिखाई देना चाहिए। इस तरह व्यवहार में परिवर्तन बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने में सहयोग करता है।

संदर्भ सूची

1. अग्निहोत्री रमाकांत, 'पढ़ना क्या है', यह लेख रिचर्ड सी एंडरसन अलफ्रेडा एच. हीबर्थ जूडिथ ए. स्काट और इयान ए.जी. बिल्किंनसन द्वारा तैयार की गई पुस्तक बीकमिंग ए नेशन ऑफ रीडर्सदृ द रिपोर्ट ऑफ द कमिशन ऑफ रीडिंग से लिया गया है। प्रकाशक द नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, वाशिंगटन डीसी 1985, https://www.eklavya.in
2. मीणा इल कैलाश, 'पठन/वाचन का अर्थ, परिभाषा, महत्व' last update 08.07.2021 https://www.kailasheducation.com
3. https://www.kailasheducation.com
4. https://www.kailasheducation.com

****